सफल दाम्पत्य जीवन के लिए हिन्दू विवाह के सात फेरे व सात वचन : (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 अमिता सिंह*

जन्म जन्म का साथ है तुम्हारा हमारा, हमारा तुम्हारा अगर न मिलते इस जीवन में लेते जन्म दुबारा। ऐसा क्या हुआ वर्तमान समय में जो इस, गीत के बोल धीमे पड़ने लगे या यो कहें कि इसका अस्तित्व ही डगमगा रहा है। समाज में जितनी ही तीव्र गति से प्रेम विवाह की संख्या बढ़ रही है उसी के अनुपात में विवाह विच्छेद की संख्या भी बढ़ रही है। प्रेम विवाह व कोर्ट, मैरेज के दौर में आज न तो वैदिक रीति–रिवाजों के साथ विवाह में सात फेरे लिये जाते है न तो व सात वचन बोले जाते है। आधुनिकता के इस दौर में विवाह के उस सात अखण्डनीय वचनों की प्रासंगिकता कही खो सी गयी है। आज पूर्ण रीतिरिवाजों के साथ सम्पन्न होने वाला ब्रह्म विवाह भी अब ब्रह्म विवाह के नाम पर भी सिर्फ औपचारिकता की पूर्ति भर है। समय की कमी के कारण तीन से चार पहरों में होने वाला विवाह अब तीन से चार घण्टों में सिमट गया है।

वैदिक संस्कृति के अनुसार सोलह संस्कार जीवन के सबसे महत्वपूर्ण संस्कार माने जाते है। विवाह संस्कार उन्हीं में से एक है जिसके बिना मानव जीवन पूर्ण नहीं हो सकता। विवाह एक ऐसा मौका होता है जब दो इंसानों के साथ–साथ दो परिवारों का जीवन भी पूरी तरह बदल जाता है। भारतीय विवाह में विवाह की परम्पराओं में सात फेरों का भी एक चलन हैं जो सबसे मुख्य रस्म होती है। हिन्दू धर्म के अनुसार सात फेरों के बाद ही शादी की रस्म पूर्ण होती हैं सात फेरों में दूल्हा व दुल्हन दोनों से सात वचन लिए जाते है। यह सात फेरे ही पति–पत्नी के रिश्ते को सात जन्मों तक बांधते है। हिन्दू विवाह संस्कार के अन्तर्गत वर–वधू अग्नि की साक्षी मानकर इसके चारों ओर घूमकर पति–पत्नी के रूप में एक साथ सुख से जीवन विताने के लिए प्रण करते है और इसी प्रक्रिया में दोनों सात फेरे लेते है, जिसे सप्तपदी भी कहा जाता है और यह सातों फेरे या पग सात वचन के साथ लिए जाते है। हर फेरे का एक वचन होता है जिसे पति–पत्नी जीवन भर साथ निभाने का वादा करते है। यह सात फेरे ही हिन्दू विवाह की स्थिरता का मुख्य स्तम्भ होते है। (01)

काम समस्त प्राणियों की सहज प्रवृति है। विवाह कामोद्वेग की मर्यादित सामाजिक अभिव्यक्ति है। विवाह से परिवार और परिवार से समाज की संरचना होती हैं परिवार सामाजिक व्यवस्थाओं तथा आदर्शों की पाठशाला, प्रयोगशाला और कार्यशाला है। विवाह परिवार की प्राथमिक प्रतिज्ञा हैं अतएव इसका असंदिग्ध महत्व स्वतः सिद्ध है। विवाह के द्वारा काम सन्तुष्टि, मनोवैज्ञानिक स्थिरता, आर्थिक सुरक्षा, व्यक्तितव संवर्धन, सामाजिक विकास तथा सांस्कृति मूल्यों के संक्षरण हेतु समुचित अवसर उपस्थित होते है। क्योंकि स्त्री और पुरूष दोनों में परमात्मा ने कुछ विशेषताओं एवं कुछ अपूर्णतायें रखी है। इस सम्मिलन से एक–दूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करते हैं। वासना का दाम्पत्य जीवन में अत्यन्त तुच्छ और गौड स्थान है। मुख्य रूप से विवाह का उद्देश्य दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न होने वाली उस महाशक्ति का निर्माण करना है जो दोनों के लौकिक तथा आध्यात्मिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सकें। विवाह शब्द दो शब्दों के योग से बना है वि + वाह 'वि' अर्थात् विशेष रूप से 'वाह' का अर्थ है वहन करना। विवाह शब्द का शाब्दिक अर्थ है गृहस्थ के भार को विशेष रूप से वहन करना।

इस प्रकार जब दो प्राणी अपने अलग अस्तित्व को समाप्त कर धार्मिक संस्कार के माध्यम से प्रेमपूर्वक आकर्षित होकर अपने आत्मा, ह्रदय और शरीर को एक–दूसरे को अर्पित कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं, तब हम सांसारिक भाषा में उसे 'विवाह' कहते है। (02) दाम्पत्यमूलक परिवार को अपने यहॉ देखने पर हम यह पाते है कि वह माता–पिता के विवाह–सम्बन्ध द्वारा निर्मित है।(03)

स्त्री अपना शील कभी भी भंग न करे क्योंकि ऐसी पतिव्रताओं पर ही पृथ्वी को गर्व होता है। वही स्त्री पापनाशक है जो सर्वदा पवित्र रहती है। गृहस्थी की जड़ स्त्री है। सारे सुखों की जड़ स्त्री है

* असोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

क्योंकि धर्म फल की प्राप्ति के लिए सन्तान वृद्धि में स्त्री ही कारण है। वही सच्चा गृहस्थ है जिसके घर में पतिव्रता स्त्री है। पतिव्रता और गंगा में कोई भेद नहीं है। वे शिव और पार्वती के समान पवित्र हैं। स्त्री के लिए उसका पति ही ॐकार है और वेद तथा श्रुति है। पति तप है तो स्त्री क्षमा है। यदि पति फल है तो स्त्री सत्क्रिया। हे पार्वती! ऐसी ही स्त्रीपुरुष धन्यवाद की पात्र हैं।(4)

भारत में परम्परागत कानून के अनुसार विवाह एक धार्मिक संस्कार है न कि एक सिविल इकरारनामा। यह प्रत्येक हिन्दू के लिए एक आवश्यक संस्कार अथवा पवित्र अनुष्ठान है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में विवाह को एक दायित्व बतलाया गया है क्योंकि एक अविवाहित पुरूष अधिकांशतया महत्वपूर्ण धार्मिक कार्यो को सम्पन्न नहीं कर सकता। भारत में विवाह धार्मिक कार्यो के समापन हेतु एक पवित्र संयोग है। यह संयोग पवित्र तथा जीवन भर अभेद्य है जो पति की मृत्यु के बाद भी चलता रहता है। माता–पिता का नैतिक कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों के लिए जीवन–साथी का चुनाव करें और बच्चों का कर्तव्य है कि वे इस चुनाव का आदर करें। विवाह दो संयुक्त परिवारों का मिलन है न कि दो युवक व्यक्तियों का। अतएव हिन्दु विवाह में जीवन–साथी के चुनाव का आधार रोमान्टिक प्रेम नहीं है। कोर्टशिप के लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि नवयुवक जोड़ा विवाह से पूर्व एक–दूसरे को देख नहीं पाते रोमान्टिक प्रेम विवाह का प्रतिफल हो सकता है कारण नहीं मनु ने पारस्परिक चुनाव को विवाह के किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया है।(05)

पारम्परिक रूप में विवाह दो या दो से अधिक विषमलिंगियों के बीच समाजोनुमोदित औपचारिक तथा अपेक्षाकृत स्थाई लैंगिक सम्बन्धों की एक व्यवस्था एवं नियमाचारों का एक पुंज है जो पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक पारस्परिक दायित्वों एवं अधिकारों द्वारा इन्हें एक सूत्र में बांधता है। आजकल आधुनिक समाजों में विवाह के इस पारम्परिक दृष्टिकोण को आधुनिक युवाओं द्वारा स्वीकार किये जाने में झिझक होने लगी है। वे अब अविवाहित रहते हुए भी विवाहित के रूप में साथ–साथ रहने में विश्वास करने लगे है पश्चिमी समाजों में अब धीरे–धीरे विवाह का रूप मात्र सुविधात्मक सम्बन्ध (अरेंजमेंट) अथवा समझ पर आधारित सम्बन्ध अर्थात मात्र समझौता बनते जा रहे है। सुविधात्मक सम्बन्ध समझने वाले जोड़ों में वहॉ वेतहासा वृद्धि होने लगी है। भारत के महानगरों (मुम्बई, देहली, कोलकाता आदि) में भी इस प्रवृत्ति का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। फिर भी एक सामान्य व्यक्ति साथ–साथ रहने और मर्यादित उचित विवाह और शादी में अन्तर करता है।(06) हिन्दू संस्कृति में विवाह आध्यात्मिक अनुभूति के लिए स्त्री, पुरूष के बीच आत्मिक बन्धन है। हिन्दू संस्कृति ब्रह्म विवाह के अतिरिक्त अपेक्षाकृत कम और निम्न आदर्शों वाले विवाह के सात अन्य स्वरूपों को भी मानती है।(07) कोई भी समाज विवाह को अनियमित नहीं रहने दे सकता। इसको नियमित करने की आवश्यकता इससे प्रकट होती है कि बच्चों के पालन–पोषण और प्रशिक्षण में सदैव ही ऐसे सामान्यक सम्मिलित होते है जो यह बताते है कि किन व्यक्तियों के साथ किन परिस्थितियों में और किस प्रकार विवाह सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है, एक बार विवाह हो जाने पर उनसे क्या अपेक्षाएँ होगी, और सम्बन्ध को किन परिस्थितियों में तोड़ा जा सकता है। किसी भी समाज में इन सामान्यकों का सम्पूर्ण ढांचा ही विवाह की संस्था है।(08)

वर्तमान स्वरूप–

कालक्रम से धार्मिक विचारधारा, सामाजिक प्रथाएँ क्रिया तथा विधि–विधान परिवर्तित हुए। आरम्भ में धर्म शास्त्रों में केवल वैदिक कर्मकाण्डों के ही समावेश का प्रयत्न लक्षित होता है। विवाह–संस्कार–विषयक पद्धतियों तथा प्रयोगों ने जो प्राचीन धर्म शास्त्रों की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक है संस्कार की सीमा में अनेक नवीन तत्वों का समावेश भी कर लिया। भारत के भिन्न–भिन्न भागों में विभिन्न पद्धतियों तथा प्रयोगों का अनुसरण किया जाता है। परिणाम स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रदेशों में वैवाहिक क्रियाएँ भी भिन्न–भिन्न है किन्तु धार्मिक और सामाजिक रूढ़िवाद भारत में इतना प्रबल है कि संस्कारों की प्रमुख रूपरेखा वैदिक युग से वर्तमान काल तक अविच्छिन्न रही है तथा उसके साधारण तत्व समस्त देश में एक समान है। साधारणतः पद्धतियों तथा प्रयोगों में निम्नलिखित पद्धति स्वीकृत है–

	माण्डलिक		गदाधार
1.	वाग्दान	1.	वाग्दान
2.	मण्डप–करण	2.	मृदाहरण
3.	पुण्याहवाचन	3.	हरिद्रा–लेपन
4.	वर–गमन	4.	मण्डप–निर्माण
5.	मधुपर्क	5.	गणपति–पूजन
6.	विष्टर–दान	6.	संकल्प
7.	गौरी–हर पूजा	7.	नान्दी श्राद्ध
8.	कन्यादानीय जलशुद्धि	8.	वर–वरण
9.	कन्यादान	9.	घटी–स्थापन
10.	अक्षतरोपण	10.	वर–गमन
11.	कंक्ण–बन्धन	11.	नीराजन
12.	आद्रक्षित–रोपण	12.	मधुपर्क
13.	तिलककरण	13.	वर–पूजा
14.	अष्टफलदान	14.	अग्निस्थापन
15.	मड.गलसूत्र–बन्धन	15.	वस्त्र परिधापन
16.	गणपति–पूजन	16.	समञ्जन
17.	वर और वधू का उत्तरीय–प्रान्त–बन्धन (ग्रन्थि)	17.	गोत्रोच्चार
18.	अक्षतारोपण	18.	कन्यादान
19.	लक्ष्मी–पार्वती–शची–पूजन	19.	प्रतिग्रहण
20.	वापन–दान	20.	समीक्षण
21.	विवाह–होम	21.	अग्नि–प्रदक्षिणा
22.	सप्तपदी	22.	वैवाहिक–होम आदि
23.	गृह–प्रवेश–होम	23.	लाजा–होम
24.	अर्णिदान	24.	पाणि–ग्रहण
25.	श्वसुर को कन्यार्पण	25.	अश्मारोहण
26.	गृह–प्रवेश	26.	गाथागान
27.	सुर्यावलोकन	27.	परिक्रमा के साथ शेष लाजा–होम
28.	अभिमन्त्रण	28.	अभिषिञ्चन
29.	वृष–चर्म पर बैठना	29.	हृदय–स्पर्श
30.	ध्रुवदर्शन	30.	सिन्दूर–दान
31.	देवकोत्थापन और मण्डपोद्वासन	31.	आचार्य–दक्षिणा
32.	चतुर्थी–कर्मी	32.	त्रिरात्र–व्रत
		33.	वधू–प्रवेश(09)

स्मृतिकारों एवं सूत्रकारों के अनुसार विवाह–संस्कार के पूर्व भी अनेक कर्मकाण्ड विधियाँ एवं शास्त्रीय विचार है, जिनका सम्पादन विवाह से पूर्व विवाह–संस्कार की पूर्णता के लिए अत्यावश्यक है जो निम्नलिखित है–

1. कुल विचार 2. वर्ण–विचार 3. गोत्र एवं प्रवर विचार
4. वैवाह्य–विचार 5. ज्योतिषशास्त्रीय 6. लोकरीति आदि।

क. प्रारम्भिक विधि–

इन उपर्युक्त विचारों पर चिन्तन करने के बाद क्रमशः वरण (वरवरण एवं कन्यावरण) मण्डपस्थापन तथा पूजन, हरिद्रालेपन मातृकापूजन, गणेशपूजन से लेकर नान्दीश्राद्ध तक पञ्चाग्डपूजन एवं लोकाचार आदि कर्मकाण्ड विधियों का सम्पादन किया जाता है। इसके बाद वर पक्ष 'वर' सहित वर

यात्रा प्रारम्भ करता है और कन्या के घर पहुँचता है, वहॉ कन्या–पक्ष द्वारा स्वागत आतिथ्य तथा लोकाचार के अनुसार द्वारपूजन, वरपूजन आदि किया जाता है।

ख. मौलिक विधि–

ब्राह्म–विवाह के मौलिक विधियों के अन्तर्गत वर और वधु दोनों से सम्बन्धित विधियाँ है। कुछ विधियाँ स्वतन्त्रतया वर से सम्बन्धित है कुछ कन्या से सम्बन्धित तथा कुछ दोनों से समवेत रूप से सम्बन्धित विधियाँ है।

अ वर सम्बन्धित विधियाँ–

1. वर का मण्डप प्रवेश–
2. वर का मधुपर्क आदि से पूजन

आ कन्या से सम्बन्धित विधियाँ–

1. कन्या–स्नान एवं वस्त्र–परिधान
2. कन्या का मण्डप – प्रवेश
3. कन्या–पूजन।

(इ) वर एवं कन्या का समवेत रूप से सम्बन्धित विधियाँ–

1. समञ्जन	6. सप्तपदी
2. गोत्रोच्चार	7. सुमङ्गली
3. कन्यादान	8. ध्रुव–दर्शन
4. ब्राम्हण वरण	9. अभिषेक
5. होम–विधि	10. दक्षिणा(10)

सप्तपदी–

पति पत्नी को उत्तर दिशा में निम्नलिखित शब्दों के साथ सात पग चलाता है 'ऐश्वर्य के लिए एकपदी हो, उर्ज के लिए द्विपदी हो, भूति के लिए त्रिपदी हो, सुखों के लिए चतुष्पदी हो, पशुओं के लिए पञ्चपदी हो, ऋतुओं के लिए षट्पदी हो, हे सखे, मुझसे सख्य के लिए सप्तपदी हो। इस प्रकार तू मेरी अनुव्रता हो। उपर्युक्त पदार्थ सुखी पारिवारिक जीवन के लिए अनिवार्य है। वैद्यानिक दृष्टि से यह क्रिया अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सप्तपदी के पश्चात् वैध रूप से विवाह पूर्ण समझा जाता है।(11)

सुबोध विवाह पद्धति में डॉ0 सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी सप्तपदी का वर्णन इस प्रकार करते है–

वर–वधू उत्तर तरफ मुँह करके खड़े हों।

नाई लावा या ऐपन से अग्नि के उत्तर तरफ उत्तरोत्तर सात मण्डल बनायें।

वर मन्त्र बोलता हुआ वधू को सात पग चलावे अर्थात् उन सातों मण्डलों पर बारी, बारी दाहिना पैर रखवावें।

वैदिक शिष्टाचार–

वर वधू से कहता है कि प्रथम लावा पुंज पर अपना दाहिना पहला पग रखों। कन्या कहती है– इससे क्या लाभ है?

वर–ऊँ एकमिषे विष्णुत्वा नयतु ।।1।।

भगवान विष्णु तुम्हें उचित अन्न की दिशा में ले चलें। गृहस्थ के लिए अन्य पहली आवश्यकता है। बिना अन्न के गृहस्थाश्रम चल नहीं सकता। अन्न के अभाव में न अपना पोषण हो सकेगा न अतिथियों की सेवा और न अन्य धर्म कार्य ही सम्भव हो सकेंगे, इसलिए धर्मपालन में भगवान विष्णु तुम्हारी सहायता करें। वर–दूसरे लावा पुंज पर पुनः दाहिना पैर रखो। (ऐसे क्रमशः सातों लावा पुंज पर दाहिना पैर रखना है)

वधू– इसका क्या प्रयोजन है?

वर– ऊँ द्वेऽऊर्ज्जे विष्णुस्वा नयतु ।।2।।

अर्थात् भगवान विष्णु तुम्हें उचित बल–प्राप्ति के मार्ग की ओर ले चलें। खाद्य सामग्रियॉ बल–पराक्रम और प्राणशक्ति देने वाली हो। भोजन स्वादिष्ट होने के साथ–साथ पुष्टिकारक भी होना ही चाहिए।

वर–ऊँ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।।3।।

अर्थात् गृहस्थ के लिए धन की महती आवश्यकता है, धन के अभाव में न यज्ञ हो सकेंगे और न बच्चों का पालन–पोषण। धनात् धर्मः ततः सुखम्। धन से धर्म का अनुष्ठान होता है और उससे सुख की प्राप्ति होती है। गृहस्थ को न्यायपूर्वक दूसरों को बिना कष्ट पहुँचाये धन प्राप्ति हेतु पुरूषार्थ करना चाहिए अतः भगवान विष्णु तुम्हें उचित धन प्राप्ति की ओर ले चलें।

वर–ऊँ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।।4।।

सुख गृहस्थ का प्राण है, यदि गृहस्थ में सुख नहीं है तो वह निष्प्राण है। धन–धान्य होने पर भी यदि घर में सुख नही ंतो ऐसा धन व्यर्थ है। धन हमको रोटी दे सकता है, भूख नहीं धन अच्छे से अच्छा पलंग और गद्दे दे सकता है नींद नहीं। धन वस्त्र दे सकता है, स्वास्थ्य और सौन्दर्य नहीं। अतः भगवान विष्णु धन के साथ–साथ तुम्हें स्वास्थ्य और सौभाग्य प्राप्ति की ओर ले चलें।

वर–ऊँ पञ्च पशुभ्यों विष्णुस्त्वा नयतु।।5।।

गृहस्थाश्रम में पशुओं की परम आवश्यकता है। गाय के बिना हम शुद्ध दुग्ध, दही मक्खन आदि बुद्धि–वर्धक एवं स्वास्थ्य वर्धक पदार्थ नहीं प्राप्त कर सकते। बैलों द्वारा खेती से हमें पर्याप्त सहायता मिलती है। पशुओं के गोवर का हम ईधन एवं खाद के रूप में भी सदुपयोग करते है। पशुओं को सम्पत्ति भी कहा गया है–गोधन, गजधन, वाजिधन आदि। अतः भगवान् विष्णु तुम्हें पशुधन की प्राप्ति के मार्ग पर ले चलें।

वर ऊँ षड्–ऋतुभ्यों विष्णुस्त्वा नयतु।।6।।

ऋतुभ्यः शब्द का अर्थ यह है कि स्वास्थ्य रक्षा एवं सर्वविध कल्याण के लिए हम प्रत्येक कार्य ऋतु अर्थात समय पर करें। हमारी प्रत्येक क्रिया ठीक समय पर हो। हमारी दिनचर्या और जीवनचर्या ऋतुओं के अनुकूल हो। शास्त्रादेश भी है–'ऋतुकालाभिगामी स्यात्' ऋतुकालगामी बनो। अतएव भगवान् विष्णु तुम्हें ऋतु के अनुकूल मार्ग पर चलने का मार्ग दर्शन करें।

वर–ऊँ सखे सप्तपदा भव, सा मामनुव्रताभव विष्णुस्त्वा नयतु।।7।।

गृहस्थाश्रम में पति–पत्नी एक दूसरे के मित्र होते है। जिन घरों में इन दोनों में मित्रता रहेगी वे घर स्वर्ग बन जायेंगे। अतएव हमारी आज्ञाकारिणी बनो। हम एक–दूसरे की बातों पर विश्वास करें और मानें। भगवान् विष्णु तुम्हें मित्रतापरक मार्ग पर ले चलें। जैसे हारमोनियम मास्टर बनने के लिए संगीत के सा, रे, ग, म, प, ध, नि–इन सात स्वरों पर अधिकार प्राप्त करना आवश्यक है उसी प्रकार गृहस्थी रूपी हारमोनियम का मास्टर बनने के लिए ऊपर बताई सात बातों के लिए पुरूषार्थ करना आवश्यक है तभी हम क्रमशः भूः, भुवः स्वः महः जनः तपः लोकों को होते हुए सत्यम अर्थात बह्मलोक को प्राप्त कर सकते है। सात पग चलने के बाद वर वधु अपने–अपने स्थान पर बैठ जाय।

कन्या पक्ष के पण्डित कन्या के पौराणिक सात बचनों को कहें–

कन्योवाच–

(1) लब्धोऽसि त्वं मया भर्तः! पुश्यैश्च् विविधै कृतैः।
देवी सम्पूजिता नित्यं वन्दनीयोऽसि में सदा।।
सुख दुःखानि कर्माणि गृहस्थस्य भवन्ति हि।
भव सौम्य सदैव त्वं कन्या एकमिषे वदेत्।।1।।

हिन्दी–पद्यानुवाद (राधेश्याम ध्वनि)–

मेरे पूज्यनीय पति प्राप्त हुए, देवी देवों की पूजा से।
नाना प्रकार के पुण्यों से, अरू मातु पिता अनुकम्पा से।।
गृहस्थ आश्रम के अन्दर, सुख दुःख दोनों सहना होगा।
धैर्य हृदय में धारण कर, सब दिन समान रहना होगा।।

(2) वापी–कूप–तडागानि यत्र–यात्रा–महोत्सवान्।
नाऽऽरम्भेदनुज्ञाय द्वे ऊर्ज्जेऽपि तथा वदेत्।।2।।

हिन्दी–पद्यानुवाद–

वापी कूवाँ तालाब यज्ञ, सामाजिक यात्रा उत्सव में।
मेरे सम्मति लेनी होगी, सुन्दर शुभ कार्यारम्भव में।।

(3) व्रतोद्यापन–दानानि स्त्रीणां भावाः स्वभावजाः।
कृत्यभंगो न ते कार्यस्त्रीणां रायस्थता वदेत्।।3।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

नारी नैसर्गिक श्रद्धा है, व्रत दान और उद्यापन में।
व्रत भंग न करना आप कभी, ऐसे शुभ सुन्दर पूजन में।।

(4) स्वर्मणाऽर्जितं वित्तं पशु–धान्य–धनागमम्।
सर्वं निवेदयन्मह्यं चत्वारीति तथा वदेत्।।4।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

सुन्दर शुभ कार्यों से अपने, पशु धान्य धनागम जो करना।
गृह–रक्षा करने हेतु सदा, प्रियतम मुझको अर्पण करना।।

(5) गजाऽश्वादि पशूनां च हेयोपादेय कारणम्।
अनापृच्छय् न कर्तव्यं पचं पशिविति संवदेत्।।5।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

क्रयविक्रय हो जब वाहन का, हाथी घोड़ा पशु प्राणी का।
पत्नी की राय जरूरी है, रखना तू लाज मेरी वाणी का।।

(6) भूषणानि विचित्राणि रत्नधातु–मयानि च।
दद्यान्न प्रतिगृह्णीयात् षड्ऋतावपि संवदेत्।।6।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

मण्डप के अन्दर दिये आज, जो वस्त्र और आभूषण है।
देकर लेना ना कभी, इसे साक्षी अम्बिका गजानन हैं।।

(7) गीत–वादित्र–माड.गल्यं वन्धूनाञ्च् गृहे सदा।
अनाहूता गमिष्यामि तदा मां प्रतिपालयेत्।।7।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

मांगलिक शुभ कर्मों में, बिन पूछे भी यदि जाऊँ मैं।
हे प्राणनाथ नाराज न हों, चरणों में शीश झुकाऊँ मैं।।
सेवा से वंचित रहने का, आता आश्रम में भेद कभी।
उस समय न हो नाराज आप, जीवन साथी पतिदेव कभी।।
चरणों में प्रीति सदा रखकर, पति परमेश्वर मानूँगीं।
यदि आप प्रतिज्ञा पालेंगे, तो मैं भी आज्ञा मानूँगीं।।
वर–पक्ष के पण्डित वर के पौराणिक प्रतिवचन कहें–

वरोवाच–

1. क्रीडा शरीर संस्कार समाजोत्सव दर्शनम्।
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषित भर्तृका।।1।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

हँसी खेल सब रास रंग, मेरे रहने पर ही करना।
सामाजिक उत्सव दर्शनकर, खुशियों से झोली खुब भरना।।
परदेश गमन हो जाने पर, हास्य गान तुम मत करना।
पर घर जाना तो दूर रहा, सजना धजना भी मत करना।।

2. विष्णुरर्वैश्वानरः साक्षी ब्राह्यमण ज्ञाति बान्धवाः।
पंचमं ध्रुव–मालोक्यं स साक्षीत्वं ममागताः।।2।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

विष्णु वैश्वानर ध्रुव तारा, भाई बान्धव और विप्र अभी।
साक्षी सब तेरे मेरे हैं, गौरी गणपति सुरश्रेष्ठ सभी।।

3. तवचित्तं मम चित्ते वाचा वाच्यं न लोपयेत्।
व्रते में सर्वदा देयं हृदयं स्वं वरानने।।3।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

हे वरानने व्रत पालन कर, हृदयंगम बातों को करना।
तेरा चित्त हो मेरे समान, अनुमोदन बातों का करना।।

4. मम तुष्टिश्च् कर्तव्या वन्धूनां भक्तिरादरात्।
ममाज्ञा परिपाल्यैषा पातिब्रत परायणे।।4।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

श्रेष्ठजनों का आदर और, लघुजन कों लाड् प्यार देना।
मेरा सन्तोष इसीमें है, आज्ञा प्रतिपालन यह करना।।
हे पतिव्रते व्रतपालन कर, नारी का धर्म तुम्हारा है।
मैं भी संतुष्ट करूँ तुमको, पति का कर्तव्य हमारा है।।

5. बिना पत्नी कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्तते।
तस्मात्वं मम विश्वस्ता भव वामाड.ग् गामिनी।।5।।

हिन्दी पद्यानुवाद–

बिना पत्नी गृहस्थ आश्रम में, ना कोई निर्वहता है।
इस धरती पर जो प्रिया–हीन, वह कष्ट अनेकों सहता है।।
इसलिए आज वेदानुसार, पद मिला तुम्हें वामांगी का।
सत से करना निर्वाह इसे, जो लिखा धर्म अर्धांगिनी का।। (12)

सात फेरो के सात वचन

विवाह के बाद कन्या वर के वाम अंग में बैठने से पूर्व उससे सात वचन लेती है। कन्या द्वारा वर से लिए जाने वाले सात वचन इस प्रकार है।

प्रथम वचन

तीर्थव्रतोद्यापन यज्ञकर्म मया सहैव प्रियवयं कुर्याः
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति वाक्यं प्रथमं कुमारी!!

(यहाँ कन्या वर से कहती है कि यदि आप कभी तीर्थयात्रा को जाओ तो मुझे भी अपने संग लेकर जाना। कोई व्रत–उपवास अथवा अन्य धर्म कार्य आप करें तो आज की भांति ही मुझे अपने वाम भाग में अवश्य स्थान दें। यदि आप इसे स्वीकार करते हैं तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।)

किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्यों की पूर्णता हेतु पति के साथ पत्नी का होना अनिवार्य माना गया है। जिस धर्मानुष्ठान को पति–पत्नी मिल कर करते हैं, वही सुखद फलदायक होता है। पत्नी द्वारा वचन के माध्यम से धार्मिक कार्यों में पत्नी की सहभागिता, उसके महत्व को स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय वचन

पुज्यौ यथा स्वौ पितरौ ममापि तथेशभक्तो निजकर्म कुर्याः
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं द्वितीयम!!

(कन्या वर से दूसरा वचन मांगती है कि जिस प्रकार आप अपने माता–पिता का सम्मान करते हैं, उसी प्रकार मेरे माता–पिता का भी सम्मान करें तथा कुटुम्ब की मर्यादा के अनुसार धर्मानुष्ठान करते हुए ईंश्वर भक्त बने रहें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।)

यहाँ इस वचन के द्वारा कन्या की दूरदृष्टि का आभास होता है। आज समय और लोगों की सोच कुछ इस प्रकार की हो चुकी है कि अमूमन देखने को मिलता है––गृहस्थ में किसी भी प्रकार के आपसी वाद–विवाद की स्थिति उत्पन होने पर पति अपनी पत्नी के परिवार से या तो सम्बंध कम कर देता है अथवा समाप्त कर देता है। उपरोक्त वचन को ध्यान में रखते हुए वर को अपने ससुराल पक्ष के साथ सदव्यवहार के लिए अवश्य विचार करना चाहिए।

तृतीय वचन

जीवनम अवस्थात्रये मम पालनां कुर्यात,
वामांगंयामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं तृतीयं!!

(तीसरे वचन में कन्या कहती है कि आप मुझे ये वचन दें कि आप जीवन की तीनों अवस्थाओं (युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था) में मेरा पालन करते रहेंगे, तो ही मैं आपके वामांग में आने को तैयार हूँ।)

चतुर्थ वचन

कुटुम्बसंपालनसर्वकार्य कर्तु प्रतिज्ञां यदि कातं कुर्याः,
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचन चतुर्थं!!

(कन्या चौथा वचन ये माँगती है कि अब तक आप घर–परिवार की चिन्ता से पूर्णतः मुक्त थे। अब जबकि आप विवाह बंधन में बँधने जा रहे हैं तो भविष्य में परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का दायित्व आपके कंधों पर है। यदि आप इस भार को वहन करते की प्रतीज्ञा करें तो ही मैं आपके वामांग में आ सकती हूँ।)

इस वचन में कन्या वर को भविष्य में उसके उतरदायित्वों के प्रति ध्यान आकृष्ट करती है। विवाह पश्चात् कुटुम्ब पौषण हेतु पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। अब यदि पति पूरी तरह से धन के विषय में पिता पर ही आश्रित रहे तो ऐसी स्थिति में गृहस्थी भला कैसे चल पाएगी। इसलिए कन्या चाहती है कि पति पूर्ण रुप से आत्मनिर्भर होकर आर्थिक रूप से परिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम हो सकें। इस वचन द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि पुत्र का विवाह तभी करना चाहिए जब वो अपने पैरों पर खडा हो, पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करने लगे।

पंचम वचन

स्वसद्यकार्ये व्यवहारकर्मण्ये व्यये मामापि मन्त्रयेथा,
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचः पंचमत्र कन्या!!

(इस वचन में कन्या जो कहती है वो आज के परिपेक्ष में अत्यंत महत्व रखता है। वो कहती है कि अपने घन के कार्यों में, विवाहादि, लेन–देन अथवा अन्य किसी हेतु खर्च करते समय यदि आप मेरी भी मंत्रणा लिया करें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ)

यह वचन पूरी तरह से पत्नी के अधिकारों को रेखांकित करता है। बहुत से व्यक्ति किसी प्रकार के कार्य में पत्नी से सलाह करना आवश्यक नहीं समझते। अब यदि किसी भी कार्य को करने से पूर्व पत्नी से मंत्रणा कर ली जाय तो इससे पत्नी का सम्मान तो बढ़ता ही है, साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति संतुष्टि का भी आभास होता है।

षष्ठम् वचन

न मेपमानमं सविधे सखीनां द्यूतं न वा दुर्व्यसनं भंजश्चेत,
वामाम्गामायामि तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं च षष्ठम!!

(कन्या कहती है कि यदि मैं अपनी सखियों अथवा अन्य स्त्रियों के बीच बैठती हूं तब आप वहां सबके सम्मुख किसी भी प्रकार से मेरा अपमान नहीं करेंगे। यदि आप जुआ अथवा अन्य किसी भी प्रकार के दुर्व्यसन से अपने आप को दूर रखें तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

वर्तमान परिप्रेक्ष में इस वचन में गम्भीर अर्थ समाहित हैं। विवाह पश्चात कुछ पुरुषों का व्यवहार बदलने लगता है। वे जरा–जरा सी बात पर सबके सामने पत्नी को डांट–डपट देते हैं। ऐसे व्यवहार से पत्नी का मन कितना आहत होता होगा। यहां पत्नी चाहती है कि बेसक एकान्त में पति उसे जैसा चाहे डांटे किन्तु सबके सामने उसके सम्मान की रक्षा की जाय, साथ ही वो किन्हीं दुर्व्यसनों में फंसकर अपने गृहस्थ जीवन को नष्ट न करें।

सप्तम वचन

परस्त्रियं मातृसमां समीक्ष्य स्नेह सदा चेन्मयि कान्त कुर्या,
वामांगमायामि तदा त्वदीयं ब्रूते वचः सप्तममत्र कन्या!!

(अन्तिम वचन के रुप में कन्या यह वर मांगती है कि आप पराई स्त्रियों को माता के समान समझेंगे और पति–पत्नी के आपसी प्रेम के मध्य अन्य किसी को भी भागीदार न बनायेंगे। यदि आप यह वचन मुझे दें तो तो ही मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूं।)

विवाह पश्चात यदि व्यक्ति किसी वाह्य स्त्री के आकर्षण में बँध पगभ्रष्ट हो जाये तो उसकी परिणिति क्या होती है। इसलिए इस वचन के माध्यम से कन्या अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का प्रयास करती है।

फेरों का वैज्ञानिक कारण–

सात फेरों में ऐसा क्या वैज्ञानिक कारण है कि जब तक सात फेरे पूरे नहीं हो जाते, तब तक विवाह संस्कार पूरा नहीं माना जाता। न एक फेरा कम न एक फेरा अधिक। जानकारों के अनुसार कम या अधिक फेरे लेना सुखद नहीं होते। हिन्दू धर्म के अनुसार सात फेरों के बाद ही शादी की रस्म पूर्ण होती है। सात फेरों के बाद सात वचन लिए जाते है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी संस्कृति में सात अंक का बहुत अधिक महत्व है। सात की संख्या मानव जीवन के लिए शरीर में ऊर्जा पार्थिव और शक्ति आध्यात्मिकता के सात केन्द्र हैं। इन्हें चक्र कहा जाता है यज्ञ और संस्कार के वातावरण में और विशिष्ट जनों की उपस्थिति में सात कदम एक साथ सातवें पद या परिक्रमा में वर कन्या एक दूसरे से कहते है। हम दोनों अब परस्पर सखा बन गए है नीचे से शुरू होकर ऊपर की ओर की ओर बढ़ने पर इनकी स्थिति इस प्रकार मानी गई है– मूलाधार शरीर के प्रारम्भिक बिन्दू पर स्वाधिष्ठान, गुदास्थान से कुछ ऊपर मणिपुर नाभिकेन्द्र, अनाहत, ह्रदय विशुद्ध, कंठ आज्ञा, ललाट दोनों नेत्रों के मध्य में और सहस्रार है। उन्हीं की तरह शरीर के भी सात स्तर माने गए हैं। इनके नाम इस तरह हैं स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, मानस शरीर, आत्मिक शरीर, दिव्य शरीर और ब्रह्म में उन शक्ति केन्द्रों और अस्तित्व की परतों या शरीर के गहनतम रूपों तक तादात्म्य बिठाने करने का विधान रचा जाता है। प्रातःकाल मंगल दर्शन के लिए सात पदार्थ शुभ माने गये है। गोरोचन, चंदन, स्वर्ण, शंख, मृदंग, दर्पण और मणि इन सातों या इनमें से किसी एक का दर्शन अवश्य करना चाहिए। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह, घृणा और कुविचार ये सात आतंरिक अशुद्धियाँ बतायी गयी है। अतः इनसे बचने के लिए सदैव बचना चाहिए क्योंकि इनके रहते बाह्य शुद्धि, पूजा पाठ, मंत्र–जप, दान पुण्य, तीर्थयात्रा, ध्यान–योग तथा विद्या ज्ञान ये सातों निष्फल हो रहते हैं। अतः मानव जीवन में सात सदाचारों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। केवल शिक्षा नहीं व्यावहारिक विज्ञान के रूप में सात वचनों को संगीत के सात सुर, इन्द्रधनुष के सात रंग, सात तल, सात समुद्र, सात ऋषि, सातों लोकों आदि के रुप में उल्लेख किया जाता है। असल बात शरीर मन आत्मा के स्तर पर एक्य स्थापित करना है जिससे जन्म जन्मान्तर के साथ विवाह की परम्पराओं में सात फेरों का एक चलन है।(13)

निष्कर्ष–

आधुनिकीकरण के फलस्वरूप या पाश्चात्य कल्चर के अन्धाधुन अनुकरण पर आज प्रेम विवाह उन्मुक्त प्रेम आदि समाज विरोधी तत्वों का प्रसार हो रहा है। इनके कारण उन देशों का गृहस्थ जीवन कितना कष्टमय बन गया है इसे हम देखकर भी नहीं देख पा रहे हैं। इस प्रकार के संयम तथा आदर्श हीन क्षणिक प्रेम सम्बन्धों में प्रेम विवाह को एक खेल बना दिया है। गुड्डा–गुडियाँ का खेल आज विवाह, कल कलह तथा तलाक। इस प्रकार विवाह सर्वथा घृणास्पद है। विचारशील विदेशी विद्वान भारतीय वैवाहिक आदर्श को ही सर्वोपरि बतलाते हैं। लाखों वर्षो से हिन्दू जाति में यह प्रथा चली आ रही है। हिन्दू विवाह–प्रथा सर्वोत्तम है। ''विमेन आफ इण्डिया'' के लेखक रथफिल्ड लिखते है–''हिन्दू विवाह प्रथा सुखद है। इसमें स्वार्थ कम और सार्वभौम–भाव बहुत अधिक है। पति–भक्ति की पूर्णता के द्वारा ही किसी जाति की उत्तमता का पता लगता है। हिन्दू–नारियों के साथ संसार की किसी भी अन्य जाति वाली स्त्रियों की तुलना नहीं की जा सकती। इसका मुख्य कारण हिन्दू विवाह की पवित्रता है।'' सात फेरों में से पहला कदम अन्न के लिए उठाया जाता है, दूसरा बल के लिए, तीसरा धन के लिए चौथा सुख के लिए, पाँचवां परिवार के लिए, छठवाँ ऋतुयों के लिए और सातवाँ मित्रता के लिए उठाया जाता है। ईश्वर को साक्षी मानकर दोनों प्रण करते हैं कि एक दूसरे के लिए अन्न संग्रह, धन संग्रह करेगें और मित्रता स्थापित करते हुए एक–दूजें की ताकत बनेंगें।

इसलिए यह ब्रह्म विवाह सर्वाधिक प्रशस्त शुद्ध, विकसित और सम्प्रति प्रचलित है। स्मृतियाँ इसे सर्वाधिक सम्मानित विवाह मानती है। इस विवाह का उद्देश्य इन्द्रिय–तृप्ति जैसी तुच्छ वस्तु नहीं, किन्तु आदर्श गृहस्थ धर्म द्वारा मोक्ष लाभ करना ही है। इस विवाह के माध्यम से दो अपरिचित प्राणी एक दूसरे को सदा के लिए आत्म समर्पण कर देते है। उनकी आत्माएँ प्रथम मिलन में ही एक दूसरे को इतना स्नेह करने लगती हैं मानों उनका जन्मजन्मान्तर का सम्बन्ध है। तभी तो कहाँ जाता है कि–विदेशी जिसे चाहते हैं उसे व्याहते हैं, जबकि भारतीय जिसे ब्याहते हैं उसे चाहते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. इन्टरनेट (गूगल सर्च)
2. त्रिपाठी सुरेन्द्रनाथ, विवाह पद्धति चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, वाराणसी। द्वितीय संस्तरण 2014, पृ0सं0 12 से 14
3. रॉबिन फॉक्स, नातेदारी एवं विवाह, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित, संस्तरण 1992 पृ0सं0 64।
4. पं0 रामलग्न पाण्डेय 'विशारद' श्री शिवमहापुराण, सावित्री ठाकुर प्रकाशन, रथयात्रा, वाराणसी सन् 2015, पृ0सं0 269–270
5. विद्याभूषण, समाजशास्त्र के सिद्धान्त, किताब महल के0पी0 कंक्कड रोड इलाहाबाद, पन्द्रहवाँ संस्करण 1997 पृ0सं0 338।
6. रावत हरिकृष्ण, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश रावत पब्लिकेशन्स, संस्तरण 2014 पृ0सं0 283।
7. राम आहूजा भारतीय समाज रावत पब्लिकेशन्स, संस्तरण 2012 पृ0सं0 107।
8. हेरी0एम0 जॉनसन, समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन अनुवादक योगेश अटल, कल्याणी पब्लिशर्स दरियागंज नई दिल्ली द्वितीय संस्तरण 1990 पृ0सं0 148।
9. पाण्डेय राजबली, हिन्दू संस्कार, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पंचम संस्करण 1995, पृ0सं0 262 से 263 तक।
10. मिश्र पतञ्जलि, शर्मा राममूर्ति त्रिपाठी हरिश्चन्द्र मणि निदेशक, प्रकाशन संस्थान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय 2001 पृ0सं0–6–8 तक।
11. पाण्डेय राजबली, पूर्वोक्त पृ0सं0 278
12. त्रिपाठी सुरेन्द्र नाथ, सुबोध विवाह पद्धति, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय वाराणसी, द्वितीय संस्तरण 2014, पृ0सं0 152 से 162
13. इण्टरनेट (गूगल सर्च)

●